जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जिसका जिसके साथ जिसतरह का संस्कार होता है, प्रकृति उसे सहजरूप से ही मिला देती है ।

ह्न संस्कार, पृष्ठ :3

वर्ष : 29, अंक : 12 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (द्वितीय), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

देश-विदेश में दशलक्षण महापर्व धूम-धाम से मनाया

दिनांक 28 अगस्त से 6 सितम्बर, 2006 तक जैन परम्परानुसार मनाये जानेवाले सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दसलक्षण महापर्व को देश-विदेश में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा 536 स्थानों पर विद्वान भेजे गये। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर जैनमंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ एवं बालकक्षा, भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

*** कोटा (राज.) :** श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में पर्वाधिराज दसलक्षण महापर्व पर आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी युगल के नियमसार की गाथा-३८ पर मार्मिक प्रवचनों का दसों दिन लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित मनोजकुमारजी शास्त्री करेली के समयसार, रहस्यपूर्ण चिट्ठी एवं दस धर्मों पर प्रवचन हुये। क्षमावाणी के दिन बाबूजी का विशेष प्रवचन हुआ।

*** इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ साधनानगर स्थित श्री पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के अनेक वर्षों के अथक् प्रयास से इस वर्ष तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर का आगमन हुआ। महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन रात्रि में डॉ. भारिल्ल के धर्म के दशलक्षण पर रोचक शैली में हृदयग्राही प्रवचन हुये, जिनका प्रतिदिन भास्कर टी.वी. द्वारा प्रसारण किया गया। प्रवचनों में लगभग 17-1800 साधर्मियों की उपस्थिति रहती थी। विशाल पण्डाल के अतिरिक्त जिनमंदिर में भी बड़ी स्क्रीन लगाई गई थी।

ज्ञातव्य है कि पर्व के मध्य एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा 17 वर्ष की आयु में लिखित पश्चाताप (खण्डकाव्य) की सुन्दर प्रस्तुति की गई तथा एक दिन विशाल पण्डाल में बड़ी स्क्रीन पर समयसार सप्ताह के रूप में आचार्य विद्यानन्दजी महाराज के सान्निध्य में हुये डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण किया गया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल के एक-एक प्रवचन लश्करी मंदिर, स्वाध्याय भवन कंचनबाग एवं रामचन्द्र नगर में भी हुये।

यहाँ प्रतिदिन प्रात: सामूहिक पूजन के पश्चात् पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा प्रवचनोपरान्त आप ही के द्वारा प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के एक-एक अध्याय का विशेष विवेचन किया गया।

दोपहर में गोधाजी द्वारा करणानुयोग की विशेष कक्षा ली गई तथा सायंकाल सामायिक एवं भक्ति के उपरान्त डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पूर्व पण्डित संजीवजी गोधा ने दस दिनों में निश्चय-व्यवहार, द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक, ज्ञाननय, शब्दनय, अर्थनय, नैगमादि 7 नय एवं 47 नयों के सारगर्भित विवेचन से नयचक्र की सम्पूर्ण विषय वस्तु से जनसमुदाय को परिचय कराया।

पर्व के पश्चात् क्षमावाणी पर्व के अवसर पर श्री विमलदादा झांझरी एवं सकल जैन समाज उज्जैन के विशेष आग्रह पर जैन मंदिर, क्षीरसागर, उज्जैन में डॉ. भारिल्ल का प्रासंगिक प्रवचन हुआ। इसके पूर्व पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचन का लाभ भी उपस्थित जन समुदाय को मिला।

पर्व के अवसर पर यहाँ लगभग 70 हजार रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

*** अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** यहाँ समाज के विशेष अनुरोध पर इस वर्ष श्री टोडरमल सि. महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित श्री रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर के पधारने से अत्यधिक धर्मप्रभावना हुई। मन्दिर में स्थान सीमित होने से सभी कार्यक्रम डी.के. पटेल हॉल में सम्पन्न हुये।

प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् आधा घण्टा गुरुदेवश्री का टेप प्रवचन तत्पश्चात् भारिल्लजी के नींव का पत्थर पुस्तक के आधार पर विविध विषयों पर तथा रात्रि में दसधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा ली गई मोक्षमार्ग प्रकाशक की कक्षा खूब सराही गई। कार्यक्रम में 1500 से भी अधिक लोगों की उपस्थिति रही। स्थानीय विद्वान दीपकभाई एवं तपिश शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** शिकागो (अमेरिका) :** यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की छात्रा एवं डॉ.भारिल्ल की दाहिती विदुषी कु. अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई द्वारा तीनों समय विभिन्न विषयों पर प्रवचनों के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई। ज्ञातव्य है कि कु. अनुप्रेक्षा धर्मप्रचारार्थ अमेरिका में भ्रमण कर रही है। आपके श्वेताम्बर पर्यूषण में मिलवौकी में प्रवचन हुए तथा अब अटलांटा व डलास में प्रवचन हो रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि **नैरोबी (अफ्रीका)** में पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद; **वाशिंगटन डी.सी.** में पण्डित दिनेशभाई शाह एवं डॉ. उज्ज्वलाजी शाह मुम्बई; **बैंकाक** में पण्डित भरतभाई शाह मुम्बई; **ह्यूस्टन** में पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई तथा **लन्दन** में पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट द्वारा धर्मप्रभावना हुई। **(शेष पृष्ठ 7 पर ....)**

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

११. पति के स्थान की पूर्ति संभव नहीं

(गतांक से आगे....)

यह तो भगवान ही जानते हैं कि ह्न रूपश्री की माँ ने इस स्वार्थी और वासनामयी दुनियाँ में अपने शील को सुरक्षित रखते हुए अपनी संतान को कैसे पाला-पोसा है। यदि उसमें धैर्य न होता और उसने ज्ञानेश के द्वारा बताये गये धार्मिक सिद्धान्तों और अपने पूर्वकृत पुण्य-पाप के फल के ज्ञान का सहारा नहीं लिया होता तो वह कभी की अपनी संतान सहित या तो अकाल मौत मरकर परलोक सिधार गई होती अथवा पति से तलाक लेकर सम्बन्धविच्छेद कर अपने सुहाग के रहते हुए भी एक असहाय-विधवा जैसा जीवन जी रही होती।

ज्ञानेश ने रूपश्री, धनश्री और उसकी माँ विजया को समझाया ह्न ''देखो, संसार में कोई व्यक्ति सम्पूर्ण नहीं होता, चाहे वह पिता हो, चाहे पत्नी हो, पुत्र हो, पुत्रवधू हो, पोता-पोती हो; परिवार का कोई भी व्यक्ति क्यों न हो ? वह सम्पूर्ण नहीं होता।

परिवार के सिवाय बिजनिस पार्टनर, पड़ौसी, नौकर-चाकर आदि जिनसे भी हमारा नित्य-नैमित्तिक व्यावहारिक सम्बन्ध हैं, सभी व्यक्तियों में कुछ न कुछ कमियाँ तो होगीं हीं।

अत: पति-पत्नी में तलाक होना, संबंध विच्छेद करना, नौकर-चाकरों को बार-बार बदलते रहना, पार्टनर और पड़ौसियों से दूर भागना आदि पारिवारिक समस्याओं के समाधान नहीं हैं। ये सब अन्तिम उपाय के रूप में ही अपनाये जा सकते हैं; क्योंकि बदले में जो भी आयेगा, हो सकता उसमें वह कमी न हो, जिसके कारण आपने उस व्यक्ति को बदला है, परन्तु उसमें भी अन्य अनेक कमियाँ तो होंगी ही; क्योंकि जब संसार में कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण है ही नहीं तो फिर पूर्ण व्यक्ति मिलेगा ही कहाँ से ? पूर्ण तो केवल परमात्मा होता है, जो आपकी सेवा-चाकरी करने या आपके साथ शादी-ब्याह रचाने आयेगा नहीं।

व्यक्तियों के विचार और आचरण में मेल न बैठ पाने के कारण स्पष्ट हैं। प्रथम तो **समस्त संसारी प्राणियों में अपनी-अपनी स्वतंत्र चित्र-विचित्र इच्छायें होतीं हैं, जिन्हें पूरा करना उनका सर्वोच्च लक्ष्य होता है तथा उनके अपने भी कुछ स्वप्न होते हैं, जिन्हें वे साकार करना चाहते हैं।**

दूसरे, **प्रत्येक संसारी व्यक्ति में क्रोध-मान-माया-लोभ एवं हास्य, रति, अरति आदि कषायों की विभिन्न जातियाँ होतीं हैं; कब/कौन-सी कषाय किस पर हावी हो जाय ह्न इसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। अत: किसी से भी अपने अनुकूल आचरण की अपेक्षा नहीं की जा सकती।** अत: जो भी/जैसा भी अपनी होनहार और पुण्य-पाप के उदयानुसार अपने सम्पर्क में आ गया है, उसे ही स्वीकृत करते हुए यथासंभव उसे ही सन्मार्ग पर लाने का एवं स्वयं में आत्मसंतोष रखने का प्रयत्न रहना चाहिए।''

ज्ञानेश का यह सन्देश सुनकर धीरे-धीरे माँ स्वयं तो सहज हुई ही, रूपश्री को भी सहज करने का प्रयत्न किया। '**काल की गति विचित्र होती है, वह भी धीमे-धीमे मानव को सहजता की ओर ले जाने में सहयोग करती है। अच्छी-बुरी स्मृतियाँ काल के गाल में सहज समाती जातीं हैं।**' ऐसा निर्णय कर माँ धैर्य धारण करने की दिशा में प्रयत्नशील हुई।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों माँ की भाँति उसकी छोटी बेटी रूपश्री भी दुर्भाग्य के झटके झेलते हुए तत्त्वज्ञान के सहारे सहज होती चली गयी।

कृष्णपक्ष एवं शुक्लपक्ष के चन्द्र की भाँति अपने भावों के अनुसार पाप-पुण्यकर्म भी घटते-बढ़ते और बदलते रहते हैं। एक दिन अचानक रूपश्री के नाम एक बड़ा सा ड्राफ्ट आया; जिसे देख पहले तो रूपश्री को आश्यर्च हुआ; बाद में स्मरण आया कि ह्न ओह ! पता नहीं उन्हें क्या आभास हो गया था कि एक दिन उन्होंने और सारी बातें कहते-कहते यह भी कहा था कि ''**कदाचित् हम बिछुड़ गये। तुम रह गईं और मैं चला गया तो तुम पैसे के लिए परेशान नहीं होगी, तुम्हें आजीविका के लिए किसी के सामने हाथ पसारने की जरूरत नहीं पड़ेगी।**

दूरदर्शिता की दृष्टि से ऐसी आर्थिक व्यवस्था जरूरी है जिससे संकटकाल में परिवार दूसरों का मोहताज न हो जाये, ऐसी व्यवस्था मैंने कर रखी है।

यद्यपि पैसा पति के स्थान की पूर्ति तो नहीं कर सका; परन्तु पुण्ययोग से रूपश्री दीन-हीन और पराधीन होने से बच गई।

अब उसने ज्ञानेश के सान्निध्य में रहकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर आत्म-साधना करने का निश्चय कर लिया। ●

१२. अब पछताये क्या होत है जब

ज्ञानेश ने कहा ह्न ''मोहन ! तुम अपनी भूल मानो या न मानो, पर सच यह है कि धनश्री और रूपश्री जैसी सर्वगुणसम्पन्न बेटियों को और भोली-भाली ममता की मूर्ति उनकी माँ को इस दु:खद और दयनीय स्थिति में पहुँचाने में तथा इकलौते बेटे को पोलियों से पीड़ित और अनाथ बनाने में सबसे अधिक दोष यदि किसी का है तो वह तुम्हारा ही है। जब आमद कम और खर्च अधिक होता है तब यही हालत होती है, तुम्हें अपना तनाव कम करने के लिए शराब के नशे में डूबे रहने के बजाय आमदनी बढ़ाने के साधन सोचने चाहिए थे, उसके बदले तुमने मद्यपान की आदत डालकर एक और नया खर्च बढ़ा लिया। इस नशे ने तुम्हें बदनाम तो किया ही, बीमार भी कर दिया। जरा सोचो! **नशा परेशानियों से बचने का उपाय है या परेशानियाँ बढ़ाने का कारण है ? लोग शराब सहारा पाने के लिए पीते हैं; परन्तु यदि शराब सहारा दे सकती होती तो व्यक्ति उसे पीकर लड़खड़ाता क्यों ? अर्द्धविक्षिप्त क्यों हो जाते हैं।**

जो व्यक्ति अपनी पत्नी और सन्तान का सही ढंग से भरण-पोषण, देख-रेख और संरक्षण जैसे अनिवार्य कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सकता,

उसे शादी-ब्याह रचाकर पत्नी और सन्तान के सुख की कल्पना करने का भी अधिकार नहीं है।

तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि अधिकार और कर्त्तव्य दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। कर्त्तव्य भूलते ही अधिकार भी स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं।''

तुमने दुर्व्यसनों में पड़कर अपने परिवार को जिस दु:ख के सागर में डुबो दिया है, उस दु:ख को तुम्हारा यह रोना-धोना, दु:खी होना, पश्चाताप करना, कम नहीं कर सकता।''

ज्ञानेश की बातें सुनकर मोहन भावुक हो उठा, स्वयं को संभाल न सका। वह औरतों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा ह्न पश्चाताप के आँसू बहाते हुए बोला ह्न

''ऐसा कौन-सा पाप है जो मैंने नहीं किया।'' अपनी कमाई के साथ पिता की करोड़ों की सम्पत्ति भी मैंने गमा दी। यह बात सच है कि खोटे/बेईमानी के धंधों से जो पैसा आता है, वह मूलधन को भी साथ लेकर खोटे रास्ते से ही चला जाता है। कहा भी है ह्न

अन्यायोपार्जितं वित्तं, दसवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते एकादशे वर्षे समूलं हि विनश्यति।।

अन्याय से कमाया धन अधिकतम दश वर्ष तक ठहरता है, पश्चात् मूल सहित नष्ट हो जाता है।

जब कुछ नहीं बचा तो मुझे साधारण क्लर्क की नौकरी करनी पड़ी; मेरे दुर्व्यसनों के कारण ही मेरे पिता हृदयाघात से परलोक सिधारे। माँ की ममता को मैंने कुचला, उसके वैधव्य का कारण मैं बना। पत्नी, पुत्रियों और पुत्र के जीवन के साथ खिलवाड़ मैंने किया। एक बात हो तो कहूँ, क्या-क्या गिनाऊँ ? सचमुच मैं किसी को मुँह दिखाने लायक ही नहीं रहा; अत: अब मुझे जीने का भी अधिकार नहीं रहा।''

ज्ञानेश द्वारा धैर्य बंधाने पर मोहन चुप तो हो गया, पर उसके मन के विकल्प नहीं रुके, अन्तर्जल्प चलता ही रहा ह्न

''हे भगवान ! मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? मुझे तो चुल्लू भर पानी में डूबकर मर जाना चाहिए; मेरी प्राणों से प्यारी बेटियों का दु:ख मुझसे देखा नहीं जाता। उनके दु:खों को अनदेखा करने के लिए, भूलने के लिए ज्यों-ज्यों मैं नशे में डूबने की कोशिश करता हूँ, त्यों-त्यों ये दु:ख बढ़ते ही जाते हैं। अब तो नशे में डूबे रहने पर भी चारों ओर ये ही दृश्य दिखाई देते हैं। मरण के सिवाय अन्य कोई उपाय ही शेष नहीं रहा; क्योंकि अब तो जहर खाने तक को पैसे नहीं रहे। नशे में डूबे रहने के लिए भी तो पैसे चाहिए न ? मदिरा मुफ्त में तो आती नहीं ! मदिरा पीने के लिए भी अब मैं पैसे कहाँ से लाऊँ ? घर की तो एक-एक वस्तु इस मदिरा देवी की बलिवेदी पर चढ़ा चुका हूँ। अब तो...।''

इसतरह अन्तर्जल्प करते-करते उसकी आँख लग गई। आँख तो लग गई, पर सोते-सोते स्वप्न में भी वही रटन....।

ज्ञानेश आत्मचिंतन और तत्त्वमंथन करने हेतु एकान्त स्थान खोजते हुए कभी सघनवृक्ष की छाया तले तो कभी किसी बाग-बगीचे में और कभी किसी तीर्थ पर चला जाता था।

एक दिन वह नदी के किनारे पर बैठा-बैठा सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य देख रहा था और सोच रहा था ह्न''जैसे इस सूर्य की इहलीला समाप्त हो रही है, इसका प्रकाश व प्रताप प्रतिक्षण क्षीण हो रहा है; ठीक इसीतरह मानव जीवन भी प्रतिपल मृत्यु की ओर बढ़ रहा है; अत: जीवन का प्रकाश रहते यथासंभव शीघ्र ही आत्मा-परमात्मा का चिन्तन-मनन कर वीतरागधर्म की प्राप्ति कर लेना चाहिए।''

मुड़कर देखा तो गोते खाता, डूबता-उतरता एवं घबराता हुआ हाथ-पाँव फड़फड़ाता एक व्यक्ति दिखाई दिया। जो कुछ-कुछ जाना-पहचाना-सा लगा। ज्ञानेश ने पास आकर देखा तो आँखें फटीं की फटीं रह गईं।

''अरे ! यह तो मोहन है। इसे यह क्या सूझा ? माना कि इसे अपने किए पापों का पश्चात्ताप है, आत्मग्लानि भी बहुत है। पर ....ऐसा अनर्थ ? निश्चय ही वह अपना संतुलन खो बैठा है। अन्यथा इन सामान्य से अल्पकालिक दु:खों से बचने के लिए वह आत्मघात करके नरक गति के असह्य, कल्पनातीत, दीर्घकालिक दु:खों को आमंत्रण नहीं देता।''

''अरे ! मैं यह क्या सोचने लगा ? अभी यह सोचने का समय नहीं है। देखूँ तो सही, सम्भव है कि वह अभी जीवित हो।''

ह्न ऐसा विचार आते ही ज्ञानेश अपनी जान को जोखिम में डालकर अथाह नदी में कूद गया और उसे नदी के मध्य से किनारे पर खींच लिया।

मोहन के पेट में बहुत पानी भर चुका था, पल दो पल में ही प्राण-पखेरू उड़नेवाले थे; पर दैवयोग से वह बच गया। प्रायश्चित्त की गंगा में गोते लगाकर उसने पापों का प्रक्षालन तो कर लिया; पर अभी भी उसकी आत्मग्लानि कम नहीं हुई।

उसने ज्ञानेश से कहा ह्न ''भाई ! इन दुर्व्यसनों के कारण मैं आत्महत्या जैसे जघन्य पाप करने को विवश हो गया और नदी में कूद पड़ा; यदि आप नहीं बचाते तो.....!

मैं इस जीवन से तो मानों मर ही चुका हूँ। अत: अब मैं पुन: इस पापचक्र एवं विषयवासना के दलदल में नहीं फंसना चाहता हूँ। अब तो मैं आत्मा का कल्याण करने के लिए ही जीना चाहता हूँ। एतदर्थ आपकी शरण में ही रहना चाहता हूँ।''

ऐसा कहते-कहते वह भावुक हो उठा, उसकी आँखों में पुन: पश्चाताप की अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी।

ज्ञानेश ने कहा ह्न ''देखो, मोहन ! इस तरह पारिवारिक उत्तरदायित्वों से पलायन करने से धर्म नहीं होता। भावुकता में धर्म का अंकुर नहीं उगता। सर्वप्रथम अपने इन दुर्व्यसनों से मुक्ति पाने का प्रयत्न करो। अपने परिवार की स्थायी आजीविका के लिए कोई उपाय सोचो। साथ-साथ में थोड़ा समय निकाल कर हमारी संगोष्ठियों में सम्मिलित होकर सत्संगति भी करो, शास्त्रों का स्वाध्याय करो। बस, यही धर्म की पृष्ठभूमि है। धर्मध्यान निराकुलता में, निश्चिंत और निर्भय होने पर ही संभव है। एतदर्थ जैसा मैं कहूँ तदनुसार अपनी दैनिक चर्या बनाओ, यही सुखी होने का सही उपाय है।'' मोहन मौन स्वीकृति के साथ ज्ञानेश के मार्गदर्शन का अक्षरश: पालन करने का दृढ़ संकल्प लेकर घर चला गया। ●

अक्टूबर शिविर की पत्रिका

अक्टूबर शिविर की पत्रिका

(पृष्ठ 1 का शेष ....दशलक्षण समाचार)

*** जयपुर (श्री टोडरमल स्मारक भवन) :** यहाँ प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, छात्र प्रवचन एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री के समयसार निर्जरा अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में डॉ. भारिल्ल के सी.डी. प्रवचन एवं छात्र प्रवचन के उपरान्त पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन द्वारा इष्टोपदेश की कक्षा ली गई। सायंकाल बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त जिनेन्द्र भक्ति होती थी। रात्रि में छात्र प्रवचन के उपरान्त डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री के दस धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में उपाध्याय कनिष्ठ के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये। विधान के कार्य श्री पंकजजी जैन भंगवा ने सम्पन्न कराये।

दिनांक 8 सितम्बर को क्षमावाणी पर्व पर आयोजित सभा में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन हुआ।

*** जयपुर (राज.) :** यहाँ राजस्थान जैन सभा द्वारा **बड़े दीवानजी के मंदिर** में आयोजित व्याख्यान माला में प्रतिदिन रात्रि में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री के दसलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये एवं पण्डित सचिनजी शास्त्री द्वारा प्रश्न-मंच सम्पन्न हुआ। *** तेरापंथी बड़ा मंदिर** में प्रतिदिन प्रात: डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री अकाझिरी एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री के प्रवचन हुये। *** आदर्शनगर मंदिर** में प्रात: पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के समयसार पर मार्मिक प्रवचन एवं रात्रि में पण्डित दिनेशजी शास्त्री के दसलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। *** महावीरनगर** दि. जैन मंदिर में प्रतिदिन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के दसधर्मों पर विशेष प्रवचन हुये। *** वरुणपथ, मानसरोवर** में डॉ. नरेन्द्रजी जैन के प्रतिदिन दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के प्रत्येक अध्याय पर तथा रात्रि में दसलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रतिदिन रात्रि में महिला मण्डल एवं युवा मंच द्वारा सांस्कृति कार्यक्रम कराये गये। *** जनता कॉलोनी** में पण्डित रमेशचन्दजी जैन लवाणवालों के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर सारगर्भित प्रवचन हुये। सायंकाल आपके प्रवचन सोलह कारण एवं दसलक्षण पर पूरे माह **अग्रवाल फार्म** स्थित जैन मंदिर में हुये। एक दिन विदुषी प्रेमलताजी जैन के मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। *** मुशरफों का मंदिर,** जौहरी बाजार में विदुषी प्रभाजी जैन द्वारा सायंकाल बालकक्षा के उपरान्त दसलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। *** अल्का नर्सिंग होम** में पण्डित चिरंजीलालजी जैन; **मालवीय नगर सैक्टर-10** में पण्डित विनयकुमारजी पापड़ीवाल; **पार्श्वनाथ चैत्यालय,** महात्मा गाँधीनगर में पण्डित ताराचन्दजी सौगाणी; **जयजवान कॉलोनी** में पण्डित अनन्तवीरजी शास्त्री; **पार्श्वनाथ मंदिर,** खवासजी का रास्ता में पण्डित अनिलजी शास्त्री; **पार्श्वनाथ चैत्यालय, बापूनगर** में पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा; **खजांची की नसियां** में पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन, **महावीर पब्लिक स्कूल** में पण्डित अनंतवीरजी शास्त्री, **महावीर स्कूल सी-स्कीम** में पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री, **महावीर स्कूल नगर विभाग** में पण्डित अनुजजी शास्त्री, **जैन मंदिर चौमू का बाग, सांगानेर** में विदुषी प्रेमलताजी जैन के रात्रि में दसधर्मों पर प्रवचन हुये।

*** अलवर (राज.) :** यहाँ श्री रत्नत्रय दि. जिनमंदिर, चेतन एंक्लेव में बा.ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित कान्तिलालजी इन्दौर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर तथा पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी द्वारा भक्तामर विधान किया गया। इस अवसर पर पण्डित जतीशजी शास्त्री के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक तथा सायं दश धर्म पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर के तीनों समय बारह भावना, छहढ़ाला तथा मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुए प्रवचनों का समाज को लाभ मिला। यहाँ निर्माणाधीन जिनमंदिर हेतु १५ फरवरी से २१ फरवरी, २००७ तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन की घोषणा की गई। **– अजित शास्त्री**

*** हेरले (महा.) :** यहाँ ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के प्रात: सोलह कारण भावना एवं रात्रि में दसधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही पर्व के मध्य समाज के विशेष आग्रह पर रुकडी, हेरले व मजले में भी आपके प्रवचनों का लाभ मिला तथा पर्व के पूर्व एवं पश्चात् मुम्बई (मलाड), घटप्रभा, बेलगांव आदि स्थानों पर भी आपके प्रवचन हुये।

*** अशोकनगर (म.प्र.) :** यहाँ जैन मंदिर में पण्डित श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरावालों के प्रात: प्रवचनसार, दोपहर में समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों से समाज लाभान्वित हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न अरुण लालोनी**

*** बैंगलौर (कर्ना.) :** यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के प्रात: समयसार एवं रात्रि में योगसार प्राभृत के आधार से दसधर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल विदुषी कु.परिणति पाटील द्वारा बालकक्षा ली गई तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ माणक चौक स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के प्रात: समयसार, दोपहर में भक्तामर एवं रात्रि में दसलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। सम्पूर्ण आयोजन श्री विमलचन्दजी चौधरी एवं श्री इन्दरमलजी सौगाणी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

*** इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** यहाँ पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल के प्रात: देव के स्वरूप पर एवं दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र पर सारगर्भित प्रवचन हुए। रात्रि में दशधर्मों के प्रवचनोपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अल्पवय में ओजपूर्ण शैली में किये गये प्रवचनों की सभी ने सराहना की।

*** इन्दौर-देवास नाका मंदिर** में डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई के प्रतिदिन प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक पर एवं रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार-दसलक्षण धर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये। *** न्यू पलासिया स्थित** श्री दि. जैन कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर के तीनों समय मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। *** नरसिंहपुरा मंदिर** में पण्डित सतीशजी कासलीवाल द्वारा तीनों समय द्रव्य-गुण-पर्याय एवं दसधर्म आदि विषयों पर प्रवचन हुये। *** मारवाड़ी मंदिर** में पण्डित निर्मलजी जैन सागर के दोनों समय प्रवचन हुये। *** गांधीनगर में** पण्डित विमलचन्दजी जैन अशोकनगर के तथा **गोराकुण्ड लश्करी मंदिर** में पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

*** मुम्बई (दादर) :** यहाँ ध्रुवधाम-बांसवाड़ा के निर्देशक पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के प्रात: दसलक्षण विधान के पश्चात् नियमसार के शुद्धभाव अधिकार पर एवं रात्रि में भिण्ड-युवा मण्डल द्वारा जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् इष्टोपदेश पर सारगर्भित प्रवचन हुये। रात्रि में डॉ. ममताजी जैन एवं श्री अतुलजी जैन के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

*** मुम्बई (भूलेश्वर) :** यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर के दोनों समय आत्मानुभूति की कला एवं दसधर्म आदि विषयों पर रोचक शैली में प्रवचन हुये।

*** मुम्बई (एवरशाइन नगर) :** यहाँ पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री के दोनों समय प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त, श्री पंचमेरु विधान का आयोजन किया गया। सायंकाल बाल कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन श्रीमती पूजा भारिल्ल ने किया।

*** मुम्बई** के विभिन्न उपनगरों में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा **अन्धेरी (ई.)** में सायंकाल दसलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल के प्रात: **जोगेश्वरी (ई.)** एवं रात्रि में **भाण्डुक (वे.)** में मार्मिक प्रवचन हुये तथा श्रीमती अल्पना भारिल्ल के रात्रि में **जोगेश्वरी (ई.)** में दसलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

*** कोल्हापुर (महा.) :** यहाँ पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार गाथा-73, 206, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र, रात्रि में भक्ति के पश्चात् दसधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त हेरले एवं मजले में भी आपके दो-दो प्रवचनों का लाभ मिला।

*** लुधियाना (पंजाब) :** यहाँ नवनिर्मित चैत्यालय में पहली बार पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी के सानिध्य में दशलक्षण पर्व धूमधाम से मनाया गया। प्रात: पूजन के दौरान पूजन संबंधी प्रवचन हुए। सायंकालीन दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचनों के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। प्रतिदिन स्वाध्याय की परंपरा भी प्रारंभ की गई।

*** किशनगढ़ (राज.) :** यहाँ नवनिर्मित महावीर जिनालय में पण्डित अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ़ के प्रतिदिन प्रात: दसलक्षण मण्डल विधान के पश्चात् समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा ली गई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त दसलक्षण धर्मों पर प्रवचन एवं तदुपरान्त विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** कैराना (उ.प्र.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ बड़ा मन्दिर में पण्डित विवेकजी पिड़ावा एवं पण्डित रविन्द्रजी महाजन द्वारा प्रात: चौबीस तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। दोपहर में छहढ़ाला की एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं प्रवचन के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **– प्रमोद जैन**

*** अहमदाबाद (ओढ़व) :** यहाँ श्री नमिनाथ दि. जैन मंदिर में पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई के प्रात: पूजनोपरांत समयसार पर एवं रात्रि में प्रवचनसार पर प्रवचन हुए। दोपहर में छहढ़ाला, सायंकाल बालकक्षा एवं भक्ति के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** खुरई (म.प्र.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन बड़ा मंदिर में पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में विदुषी कु. स्वाति जैन जयपुर द्वारा भक्तामर स्तोत्र एवं सायंकाल बालवर्ग की कक्षा ली गई। प्रतिदिन जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे।

*** सागर (म.प्र.) :** यहाँ नवनिर्मित महावीर जिनालय में पण्डित पदमचन्दजी अजमेरा रतलाम के मनुष्य भव की सार्थकता विषय पर मार्मिक प्रवचन हुए। इसी अवसर पर पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा के निर्देशन में पंचपरमेष्ठी विधान एवं दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ। साथ ही आपके द्वारा बालकक्षा एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। साथ ही स्थानीय पण्डित अखिलेशजी शास्त्री ने तत्त्वार्थ सूत्र की कक्षा ली।

*** रतलाम (राम मोहल्ला) :** यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर में पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के पाँचवे अध्याय पर एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। साथ ही पण्डितजी द्वारा पाठशाला का पुनर्गठन भी किया गया।

*** मण्डला (म.प्र.) :** यहाँ श्री महावीर दि. जैन मन्दिर में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के सानिध्य में दशलक्षण पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: पूजनोपरांत धर्म क्या? कहाँ ? कब ? कैसे ? और क्यों? इत्यादि विषयों पर रोचकशैली में प्रवचन हुए। दोपहर में नाटक समयसार एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचनों से समाज को लाभ मिला।

*** सरदारशहर (राज.) :** यहाँ श्री आदिनाथ जिन चैत्यालय में पण्डित मनीषजी कहान शास्त्री खड़ैरी के सुबह दशधर्म पर, दोपहर में विविध विषयों पर एवं रात्रि में जिनधर्म प्रवेशिका पर प्रवचन हुए। प्रवचनोपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** खड़ैरी (म.प्र.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर में पण्डित नरोत्तमदासजी के प्रात: एवं रात्रि में मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में पण्डित भानुजी शास्त्री द्वारा प्रवचन एवं सायंकालीन बालकक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ तथा **श्री तारण तरण चैत्यालय** में प्रात: एवं रात्रि में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सी.डी. प्रवचनों के माध्यम से समाज को धर्मलाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** सुलतानपुर (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर द्वारा दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक की प्रौढ़कक्षा एवं सायंकालीन बालकक्षा ली गई। रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचनों के पश्चात् प्रश्चमंच एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

*** कोलकाता (बेलदा) :** यहाँ श्री दि. जैन पार्श्वनाथ मंदिर में पहली बार पण्डित श्री संभवजी शास्त्री नैनधरा द्वारा प्रात: जिनेन्द्र पूजन के उपरान्त छहढाला ग्रन्थ पर प्रवचन हुये। दोपहर में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की प्रौढ़ एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में भक्ति के पश्चात् दसधर्मों पर प्रवचन हुये। सभी कार्यक्रमों में श्रीमती अलकाजी एवं श्री महेशजी जैन का विशेष योगदान रहा।

*** गढ़ाकोटा (म.प्र.) :** यहाँ श्री ऋषभदेव मुमुक्षु मंडल के तत्त्वावधान में पण्डित विमलकुमारजी जलेसर के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक पर एवं दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन हुए। सायंकाल जिनेन्द्रभक्ति के उपरांत दशधर्मों पर प्रवचन हुये। प्रतिदिन प्रश्चमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये ।

*** कोलकाता (बाली) :** यहाँ पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा एवं दोपहर में तेरह द्वीप विधान सम्पन्न हुआ। सायंकालीन भक्तामरस्तोत्र की कक्षा, बालकक्षा, जिनेन्द्रभक्ति एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए। प्रवचनोपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** अहमदाबाद (सरसपुर) :** यहाँ पण्डित विमोशजी शास्त्री खड़ैरी के प्रात: क्रमबद्धपर्याय पर प्रवचन हुए। दोपहर में छहढाला की एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई । रात्रि में दसलक्षण धर्मों पर प्रवचनों के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** गुड़गाँव (हरि.) :** यहाँ प्रथम बार श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर में पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित विवेकजी सागर द्वारा प्रात: पूजन करायी गयी। दोपहर में छहढ़ाला की प्रौढ़कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में पंकजजी शास्त्री के दशधर्मों के प्रवचनोपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

*** हिसार (हरि.) :** यहाँ पण्डित सौरभजी शास्त्री गढ़ाकोटा के प्रात: दशलक्षण धर्मो पर एवं रात्रि में छहढ़ाला पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में छहढ़ाला की कक्षा ली गई।

*** बनियानी (कोटा) :** यहाँ श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में पण्डित धर्मचन्दजी जयथल के सानिध्य में प्रात: दशलक्षण विधान एवं दोपहर में ढ़ाई द्वीप विधान सम्पन्न हुआ। दोपहर एवं शाम को क्रमश: रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए। **– जवाहरलाल जैन**

(शेष अन्तिम पृष्ठ पर ....)

अक्टूबर शिविर की पत्रिका

अक्टूबर शिविर की पत्रिका

प्रवचनसार का सार 59

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

उत्सर्ग का अर्थ त्याग होता है और यह उत्सर्ग मार्ग ही सर्वोत्कृष्ट मार्ग है, निश्चय मार्ग है। शुद्धोपयोग ही उत्सर्ग मार्ग है। पीछी-कमण्डलु रखना, शास्त्र रखना, गुरु के वचन सुनना - ये अपवाद मार्ग हैं और यह अपवाद मार्ग उत्कृष्ट मार्ग नहीं है। यह अपवाद मार्ग मार्ग थोड़े ही है, यह तो मजबूरी है; क्योंकि अशुद्धता आदि की परिस्थितियों में पीछी-कमण्डलु के बिना रहना संभव नहीं है। उपकरण रूप उपधि का ग्रहण अपवाद मार्ग है।

वे उपकरण भी अल्प, अनिंदित और मूर्च्छा से रहित होने चाहिए। यदि कमण्डलु धातु का बना हो, तो धातु के कीमती होने से उसके चोरी होने की संभावना बनी रहती है और यदि चोरी हो जाय तो फिर किससे माँगा जाय ? यदि एक बार धातु के कमण्डलु रखने लगे तो फिर सेठ लोग हीरे जड़े सोने-चाँदी के कमण्डलु देना प्रारंभ कर देंगे। इसलिए कमण्डलु लकड़ी का रखते हैं; क्योंकि कोई इसे ले नहीं जाए।

मुनिराजों को ६ घड़ी सुबह, ६ घड़ी दोपहर, ६ घड़ी शाम सामायिक करनी है, कोई पीछी कमण्डलु को उठाकर नहीं ले जाए ह्न यह चिन्ता यदि अन्दर में रही तो वे कमण्डलु आदि उपधि हो जाएंगे; क्योंकि वे सामायिक में बाधक होंगे ।

पीछी-कमण्डलु तो ऐसे होने चाहिए कि कोई ले न जा सके और उपलब्धि भी सहज हो। आजकल तो दोनों की उपलब्धि ही कठिन हो गई। पीछी भी हजार-हजार रुपए में बनने लगी है। कमण्डलु भी महँगा बनता होगा; लेकिन उसके चोरी जाने की संभावना नहीं है; क्योंकि जितना खर्चा उसके बनने में लगता है, उतना रुपया उसके बेचने पर नहीं आएगा। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि किसी चीज के बनने में पैसा लगना अलग बात है और बाजार में जाकर उसी वस्तु को बेचकर पैसा पैदा करना अलग बात है। सोने या चाँदी का कमण्डलु होगा तो उसको बेचकर तो पैसा प्राप्त किया जा सकता है; लेकिन लकड़ी के कमण्डलु को बेचकर पैसा प्राप्त नहीं किया जा सकता। किसी भी वस्तु के चोरी नहीं जाने का कारण उसको बेचकर पैसा प्राप्त नहीं होना है।

विदेशों में मैंने यह देखा कि अधिकांश मकान काँच के हैं, दरवाजे काँच के हैं, खिड़कियाँ काँच की हैं। एक बार मैंने एक सज्जन से कहा कि आपका यह मकान पूरा काँच का है, यहाँ कोई आकर पैर की ठोकर मारे तो टूट जाय और वह सामान वगैरह ले जा सकता है। तब उन्होंने कहा कि हमारे पास है क्या, जो कोई ले जाएगा ? हमारा सब कुछ बैंकों में रहता है, बीस डॉलर भी कोई नगद नहीं रखता है, सब चैक से पेमेण्ट होता है।

तब मैंने कहा कि आपके यहाँ टी.वी. आदि महँगी-महँगी उपभोग की सामग्री तो है, तब उन्होंने कहा कि इनको कोई नहीं ले जाएगा; क्योंकि ये सैकण्ड हैण्ड हैं। यहाँ सैकण्ड हैण्ड कारें इतनी पड़ी हैं कि कोई इन्हें हिन्दुस्तान फ्री में भी ले जा सकता है, इन कारों की लाइन लग रही है। यहाँ हिन्दुस्तानी लोग आते हैं, सैकण्ड हैण्ड कार खरीदकर काम चलाते हैं, बाद में फिर वे भी नहीं लेते।

जिसप्रकार अमेरिका में सैकण्ड हैण्ड कारों को बेचने पर अधिक पैसा नहीं मिलता; उसीप्रकार कमण्डलु कितना भी मंहगा बने; लेकिन उसको बेचने पर पैसा नहीं मिलता, इसीलिए उसकी चोरी होना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में वह शुद्धोपयोग में साधक ही है, बाधक नहीं।

जिसप्रकार कमण्डलु के चोरी होने की संभावना नहीं है; उसीप्रकार गुरु के वचन भी चोरी नहीं हो सकते। किताब चोरी हो सकती है; लेकिन गुरु के वचन नहीं; क्योंकि गुरु के वचन हृदय में जाकर बस चुके हैं। यही कारण है कि पुस्तक के स्थान पर गुरु वचनों को उपकरण माना है।

तदनन्तर 'उत्सर्ग ही वस्तुधर्म है, अपवाद नहीं' ह्न ऐसा उपदेश करनेवाली गाथा 224 की टीका का भाव इसप्रकार है ह्न

''श्रामण्यपर्याय का सहकारी कारण होने से जिसका निषेध नहीं किया गया है ह्न ऐसा शरीर भी परद्रव्य होने से परिग्रह है, अनुग्रह योग्य नहीं; किन्तु उपेक्षा योग्य ही है ह्न ऐसा कहकर भगवन्त अर्हन्तदेवों ने अप्रतिकर्मपने का उपदेश दिया है, तब फिर वहाँ शुद्धात्मतत्त्वोपलब्धि की संभावना के रसिक पुरुषों के शेष अन्य परिग्रह अनुग्रह योग्य कैसे हो सकता है ? ह्न ऐसा उन अर्हन्तदेवों का आशय व्यक्त ही है। इससे निश्चित होता है कि उत्सर्ग ही वस्तुधर्म है, अपवाद नहीं। तात्पर्य यह है कि वस्तुधर्म होने से परम निर्ग्रंथपना ही अवलम्बन योग्य है।''

टीका में स्पष्ट रूप से शरीर को भी उपधि अर्थात् परिग्रह ही कहा है, शरीर परद्रव्य होने से परिग्रह ही है। यह शरीर मुनिराजों द्वारा चिन्ता करने योग्य नहीं है। शरीर को त्यागना आत्महत्या है, अपराध है; यद्यपि मुनिराज आत्महत्या नहीं कर सकते; तथापि यह शरीर उपेक्षा योग्य ही है, अनुग्रह योग्य नहीं। शरीर बाहर की वस्तु होने से राग करने लायक नहीं है; क्योंकि यह भी बाह्य परिग्रह है।

मैं एक बात और स्पष्ट करना चाहता हूँ कि हम लोग तो इस ओर अग्रसर होते हैं कि राग अपना नहीं है, केवलज्ञान अपना नहीं है; किन्तु आचार्य तो शरीर से प्रारम्भ करके स्त्री, पुत्रादि अपने नहीं है ह्न इस ओर अग्रसर हो रहे हैं और वह भी श्रमणों के संदर्भ में। यह बात मुमुक्षुओं को भी समझने योग्य है और श्रमणों को भी।

समस्या यह है कि इस बात की उपेक्षा कर हम सभी परिग्रह जोड़ रहे हैं। 'केवलज्ञान भी अपना नहीं है' ह्न यह कहनेवाले भी सुबह से लेकर शाम तक बढ़िया खाना-पीना, कमाने में ही लग रहे हैं। इतना सब होने के बाद भी सभी को सम्यग्दर्शन चाहिए, सम्यक्चारित्रवंत भी बनना है, मोक्ष भी जाना है। किसी को छोटा तो बनना ही नहीं है, सभी को चक्रवर्ती बनना है ह्न चाहे वे चारित्र के चक्रवर्ती हो या सम्यग्दर्शनादि के।

इसके बाद गाथा २२५ इसप्रकार है ह्न

उवयरणं जिणमग्गे लिंगं जहजादरूवमिदि भणिदं।
गुरुवयणं पि य विणओ सुत्तज्झयणं णिद्दिट्ठं।।२२५।।

(हरिगीत)

जन्मते शिशुसम नगन तन विनय अर गुरु के वचन।
आगम पठन हैं उपकरण जिनमार्ग का ऐसा कथन।।२२५।।

यथाजातरूप नग्न लिंग भी जिनमार्ग में उपकरण कहा गया है और गुरु के वचन, सूत्रों का अध्ययन और विनय भी उपकरण कही गई है।

शरीर, गुरु के वचन, सूत्रों का अध्ययन और विनय - इन्हें उपकरण कहा

है अर्थात् ये भी परिग्रह या उपधि है। ये अपवाद मार्ग है, उत्सर्ग मार्ग नहीं।

सर्वप्रथम तो शरीर को उपकरण कहा। वह शरीर भी जैसा माँ के पेट से पैदा हुआ था, वैसा शरीर। शरीर के ऊपर जो बाल उग आते हैं; उन्हें भी उखाड़ना पड़ेगा; क्योंकि जन्मजात शरीर में बाल नहीं थे। इसप्रकार शरीर को उपकरण कहने के बाद गुरु के वचन और सूत्रों के अध्ययन को भी उपकरण कहा। जो सूत्र गुरु ने अपने मुख से बताए, वे गुरुजी के वचन भी परिग्रह हैं और उन सूत्रों का चिंतन, अध्ययन भी परिग्रह है।

यहाँ पर उन्होंने गुरु के वचन और सूत्रों के अध्ययन को उपकरण कहा है न कि शास्त्र को। मुझे एक विकल्प हमेशा आता है कि मुनिराज किसप्रकार पीछी, कमण्डलु और शास्त्र - ये तीन चीजें रख सकते हैं; क्योंकि यदि पीछी-कमण्डलु पकड़ेंगे, तब शास्त्र कैसे पकड़ेंगे ?

दूसरी बात यह भी है कि दूसरों को पकड़ा नहीं सकते हैं। मान लो, यदि दूसरों को पीछी-कमण्डलु पकड़ाते हैं और यदि वे नहीं आते हैं तो फिर मुनिराज कैसे जा सकते हैं ? उनकी जाने की स्वतंत्रता कहाँ रही ? पीछी-कमण्डलु पकड़ने वाले कहे कि हम तो महाराज के पीछे-पीछे आ ही रहे हैं, तो भी महाराजजी को पीछे तो देखना ही पड़ेगा कि वे आ रहे हैं या नहीं ? ये उपकरण तो महाराजजी को २४ घण्टे ही चाहिए; क्योंकि यदि उन्हें कहीं बैठना हो, तो जीव-जन्तुओं को हटाने के लिए पीछी चाहिए। इसप्रकार जब मुनिराज एक हाथ में पीछी लेंगे और एक हाथ में कमण्डलु, तब शास्त्र किसप्रकार लेंगे ? इसलिए गुरु के वचन उपकरण हैं न कि शास्त्र।

गुरु की विनय को भी गाथा में उपकरण कहा है अर्थात् गुरु की विनय अपवाद मार्ग है। मन से, वचन से एवं काय से की गई गुरु की विनय शुभोपयोग है; क्योंकि यह परलक्ष्यी भाव है। इसलिए ये सभी उपकरण अपवाद मार्ग हैं, परिग्रह हैं।

इस संदर्भ में इसी गाथा की टीका का भाव इसप्रकार है ह्न

''इसमें जो अनिषिद्ध परिग्रह है, वह श्रामण्यपर्याय के सहकारी कारण के रूप में उपकार करनेवाला होने से उपकरणभूत है, दूसरा नहीं। उसके विशेष भेद इसप्रकार हैं ह्न सहजरूप से अपेक्षित यथाजातरूपपने के कारण जो बहिरंग लिंगभूत हैं ह्न ऐसे कायपुद्गल; जिनका श्रवण किया जाता है ह्न ऐसे तत्कालबोधक, गुरु द्वारा कहे जाने पर आत्मतत्व-द्योतक, उपदेशरूप वचनपुद्गल तथा जिनका अध्ययन किया जाता है ह्न ऐसे नित्यबोधक, अनादिनिधन शुद्ध आत्मतत्त्व को प्रकाशित करने में समर्थ श्रुतज्ञान के साधनभूत शब्दात्मक सूत्रपुद्गल और शुद्ध आत्मतत्त्व को व्यक्त करनेवाली जो दार्शनिक पर्यायें, उनरूप से परिणमित पुरुष के प्रति विनीतता का अभिप्राय प्रवर्तित करनेवाले चित्रपुद्गल। यहाँ ऐसा तात्पर्य है कि काय की भाँति वचन और मन भी वस्तुधर्म नहीं है।''

उपरोक्त टीका में कहा है कि कायपुद्गल, वचनपुद्गल, सूत्रपुद्गल और चित्रपुद्गल ह्न इन चार पुद्गलों की उपधि होती है अर्थात् चार पुद्गलों का ग्रहण होता है। कायपुद्गल तो शरीर हैं। गुरु के द्वारा कहे जाने पर आत्मतत्त्व द्योतक, सिद्ध उपदेशरूप वचनपुद्गल हैं। यहाँ वचनपुद्गल में गुरु के द्वारा कहे जानेवाले कहा है न कि लिखे जानेवाले।

मैं इस संबंध में कुछ अधिक नहीं कहना चाहता हूँ; क्योंकि मुनिराज तो शास्त्र रखते हैं, इसमें मुझे कुछ ऐतराज भी नहीं है; क्योंकि वे स्वाध्याय करेंगे तो बाह्य झंझटों से दूर रहेंगे। मैं तो यह बताना चाहता हूँ कि वचन तत्कालबोधक होते हैं, गुरु के द्वारा मुँह से जो वचन निकले, वे ही वचनपुद्गल हैं। 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' इस रूप में शब्दात्मक सूत्रपुद्गल होते हैं। मन में जो नमस्कार करने के भाव आते हैं; विनीतता के भाव होते हैं; विनय के भाव होते हैं, वे चित्रपुद्गल हैं।

इसप्रकार इन पुद्गलों के परिग्रह को उपधि कहा है। यह उपधि भी अपवादमार्ग है, उत्सर्गमार्ग नहीं।

इस संबंध में मैं यह कहना चाहता हूँ कि हर मुनि उत्सर्गमार्ग और अपवादमार्ग की मैत्रीवाले होते हैं। ऐसा नहीं होता है कि कोई मुनि उत्सर्गमार्गी हो और कोई मुनि अपवादमार्गी। हर मुनि उत्सर्गमार्गी भी है और पीछी-कमण्डलु, गुरु की विनय आदि के कारण अपवादमार्गी भी हैं।

जो मुनि एकल विहारी हो जाते हैं, उनके वचनपुद्गलरूप उपधि भी नहीं रहती; क्योंकि एकलविहारी होने से वे मौन ले लेते हैं, इसलिए बोलनेरूप वचनपुद्गल का परिग्रह नहीं रहता और आचार्यों के पास नहीं रहने से उपदेश नहीं सुनते हैं; अतः सुननेरूप वचनपुद्गल भी नहीं रहता। कई मुनि एकलविहारी हो जाते हैं। जो तद्भवमोक्षगामी होते हैं, वे एकलविहारी होते हैं। बाहुबली एकलविहारी थे; अतएव न वे बोलते थे, न सुनते थे। ऋषभदेव स्वयं भी एकलविहारी थे, उनके पास भी वचनपुद्गलरूप परिग्रह नहीं था, मात्र कायपुद्गल की उपधि थी।

तदनन्तर आचार्य ने उत्सर्गमार्ग और अपवादमार्ग की मैत्री का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। उसी के अन्तर्गत उत्सर्ग और अपवाद की मैत्री द्वारा आचरण के सुस्थितपने का उपदेश करनेवाली 230 वीं गाथा इसप्रकार है ह्न

बालो वा बुड्ढो वा समभिहदो वा पुणो गिलाणो वा।
चरियं चरदु सजोग्गं मूलच्छेदो जधा ण हवदि ।।२३०।।

(हरिगीत)

मूल का न छेद हो इस तरह अपने योग्य ही।
वृद्ध बालक श्रान्त रोगी आचरण धारण करें।।२३०।।

बाल, वृद्ध, श्रांत या ग्लान श्रमण मूल का छेद जैसे न हो; उसप्रकार से अपने योग्य आचरण करो।

इस गाथा में यह कहा है कि कोई मुनिराज बालक हों, वृद्ध हों, थके हुए हो या बीमार हों; तो वे मुनिराज मूल का छेद न हो जाए ह्न इसप्रकार अपनी चर्या में आचरण करें अर्थात् कठोर आचरण नहीं करें; क्योंकि यदि कोई बाल, वृद्ध या बीमार मुनि 8-8 दिन का उपवास करेंगे तो धर्म में बाधा खड़ी होगी, इसलिए वे मुनिराज कोमल आचरण करें।

इस बात पर आचार्यदेव ने बहुत बढ़िया तर्क दिया है कि यदि बाल या वृद्ध साधु कठोर आचरण करेंगे तो देह छूट जाएगी और यदि देह छूटी तो स्वर्ग में जाएंगे। स्वर्ग में पहुँचते ही वे छटवें गुणस्थान से चौथे गुणस्थान में आ जाएंगे। मुनि-अवस्था में छटवें गुणस्थान के योग्य संयम पल रहा था; पर स्वर्ग में पहुँचते ही असंयमी हो जाएंगे। मुनिराज की मनुष्य देह का छूटना संयम का छूटना है। 'असंयमी न हो जाय' इसलिए मुनिराज मृत्यु भी नहीं चाहते और 'संयम भंग हो' इस कीमत पर जीवन को भी नहीं चाहते। अतएव उत्सर्गमार्ग और अपवादमार्ग में मैत्री होनी चाहिए।

इसप्रकार आचार्यदेव ने कहा कि देह की स्थिति के अनुसार आचरण करना चाहिए। यह देह अनुग्रह योग्य भी नहीं है और देह छूट जाय ह्न ऐसा आचरण भी योग्य नहीं है। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

(पृष्ठ 7 का शेष ....दशलक्षण समाचार)

*** मन्दसौर (म.प्र.) :** यहाँ स्वाध्याय मंदिर में पण्डित शीतलजी उज्जैन द्वारा प्रात: समयसार पर प्रवचन हुए। सायंकाल सामयिक एवं भक्ति के पश्चात् दशधर्मों पर प्रवचन हुए। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

*** तीर्थधाम मंगलायतन(अलीगढ़) :** यहाँ गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया एवं श्री पवनजी जैन द्वारा समयसार, तत्त्वार्थसूत्र एवं दसधर्म पर प्रवचन हुये। प्रतिदिन प्रात: दसलक्षण मण्डल विधान का आयोजन हुआ। रात्रि में आदिनाथ विद्यानिकेतन के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। ज्ञातव्य है कि प्रतिदिन **सासनी नगर** स्थित श्री दिग. जैन मंदिर में पण्डित अशोकजी लुहाड़िया के दसधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: प्रासंगिक पूजन-विधान होता था।

*** उदयपुर (राज.) :** यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल में प्रतिदिन पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया के समयसार एवं दसधर्म पर प्रवचनों के अतिरिक्त गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसमें पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन द्वारा अनेकान्त : जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में एवं प्रो.पारसमल अग्रवाल द्वारा अनेकान्त और आधुनिक विज्ञान पर विचार व्यक्त किये गये। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. उदयचन्दजी जैन ने की।

*** मोरबी (गुज.) :** यहाँ पण्डित सुधीरजी शास्त्री के तीनों समय क्रमश: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दसधर्म एवं तत्त्वज्ञान पाठ. भाग-१ के आधार पर प्रवचन हुये।

*** कानपुर (उ.प्र.) :** यहाँ दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' के प्रासंगिक प्रवचन हुये। साथ ही दो दिन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया के प्रवचनों का लाभ मिला।

बिजौलिया (राज.) : यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय में प्रतिदिन दसलक्षण मण्डल विधान के अतिरिक्त पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर के समयसार एवं दसधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा रात्रि में श्री कहान सांस्कृतिक मंच द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** औरंगाबाद (महा.) :** यहाँ पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री नागपुर के समयसार व दसधर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** भिण्ड (म.प्र.) :** यहाँ श्री महावीर परमागम मंदिर में पण्डित मनोजजी जैन जबलपुर के प्रात: 'मैं जाननहार हूँ' एवं रात्रि में दस धर्मों पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। इस अवसर पर लगभग २५०००/-रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

*** सेमारी (राज.) :** यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जिन चैत्यालय में पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री अरथुना के तीनों समय क्रमश: समयसार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार व दस धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में कल्पद्रुम मण्डल विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

नोट : उक्त समाचारों के अतिरिक्त और भी अनेक स्थानों से दसलक्षण समाचार प्राप्त हो रहे हैं; जिन्हें यथासंभव आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल 'शिक्षारत्न' से सम्मानित

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल को राजस्थान युवा छात्र संस्था, जयपुर की ओर से शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षाजगत में उत्कृष्ट कार्य के लिये '**शिक्षा-रत्न**' की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान अनन्तश्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज के करकमलों से दिया गया। यह सम्मान राजस्थान में पहली बार जैन शिक्षक (विद्वान) को प्रदान किया गया है। ह्न **डॉ. पीयूष त्रिवेदी, उपाध्यक्ष**

वैराग्य समाचार

1. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक **पण्डित भरतेशजी पाटील, पुणे** का देहावसान हो गया है । आप महाविद्यालय के प्रतिभावान छात्र थे तथा वर्तमान में आई.ए.एस. अधिकारी के रूप में सहायक आयुक्त आयकर विभाग पूणे में कार्यरत थे।

2. **जबलपुर निवासी** श्री ज्ञानचन्दजी जैन (कूडावाले) का दिनांक 1 सितम्बर, 2006 को शान्त परिणामों से देहावसान हो गया है। आप आध्यात्मिक प्रवक्ता पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन के पिताजी थे।

3. **झांसी निवासी** श्री नेमीचन्दजी जैन का दिनांक 25 अगस्त को 78 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आप अनेक संस्थाओं के संरक्षक थे, साथ ही झांसी में हुये पंचकल्याणक के अवसर पर बाल तीर्थंकर के पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त कर चुके थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 151/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

4. **कुचामन सिटी निवासी** श्री हीरालालजी पहाड़िया का देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को श्री संतोषकुमारजी पहाड़िया की ओर से 500/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

5. **सहारनपुर निवासी** स्व. श्री अमीरचन्दजी जैन की दिनांक 26 अगस्त को प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मनोकान्ता जैन द्वारा 1100/-रुपये दानस्वरूप प्राप्त हुये हैं।

6. **दौसा (राज.) निवासी** श्री छतरमलजी जैन (छाबड़ा) का 96 वर्ष की आयु में दिनांक 9 सितम्बर,06 को देहावसान हो गया है। आप सरलस्वभावी धार्मिक व्यक्ति थे। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री माणकचन्दजी प्रेमचन्दजी जैन दौसा की ओर से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 1100/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

साधना चैनल पर रात्रि 10.20 से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचनों को देखना/सुनना न भूलें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) सितम्बर (द्वितीय) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127